मोहिनीअट्टम (केरल)

Drishti IAS

मोहिनीअट्टम (केरल)

- इसे मोहिनी (भगवान विष्णु का एक अवतार) का नृत्य भी कहा जाता है।
- मूल रूप से नृत्यांगनाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य।
- पैरों की थाप नहीं होती है।
- कदमताल सौम्य होती है।
- विष्णु के स्त्रैण नृत्य (स्त्री) की कहानी का वर्णन।

प्रस्तुतिकरण

- अधिकांशतः एकल नृत्य।
- नृत्य में लास्य पहलू (सौंदर्य, लालित्य) का प्रभुत्व होता है।
- कथकली के उत्साह के साथ-साथ भरतनाट्यम का लालित्य और कोमलता का समावेश।
- प्रसिद्ध मलयाली कवि वी.एन. मेनन ने कल्याणी अम्मा के साथ इसे पुनर्जीवित किया।

मोहिनीअट्टम का उल्लेख

- मझमंगलम नारायणन नंबूदिरी द्वारा 1709 में लिखित "व्यवहारमाला" में।
- बाद में कवि कुंजन नम्बियार द्वारा लिखित "घोषयात्रा" में।

वाद्ययंत्र

- एडक्का (मुख्य)
- मृदंगम
- वीणा
- बाँसुरी
- कुजित्तालम या मंजीरा

वेशभूषा

- केरल की कसावु साड़ी।
- श्वेत और श्वेताभ (धूमिल सफेद) मुख्य रंग तथा सुनहरे रंग के बेल-बूटे की डिज़ाइनों की उपस्थिति।
- घंटियों (घुँघरू) की चमड़े की पट्टी।

'अटवकुल या अटावुस' चालीस मूल नृत्य गतियों का संग्रह है।

[और पढ़ें...](https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/mohiniyattam-kerala-1)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/mohiniyattam-kerala-1